REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 10 | ISSUE - 7 | APRIL - 2021

सब्जियों की कृषि : हनुमानगढ़ जिले (राजस्थान) एक प्रतीक अध्ययन

डॉ. एस.एस. खींची[1] , जगदीश चन्द्र कुम्हार[2]
[1]विभागाध्यक्ष एवं एसोसिएट प्रोफेसर , भूगोल विभाग, डॉ. भीमराव अम्बेडकर राजकीय महाविद्यालय, श्री गंगानगर (राजस्थान)
[2]शोधार्थी – भूगोल , महाराजा गंगासिह विश्वविद्यालय, बीकानेर , राजस्थान भारत.

शोधसार

भारत एक कृषि प्रधान राष्ट्र है। यहां की अधिकांश आबादी कृषि एवं सम्बद्ध कार्यो में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से संलग्न है। साक–सब्जियों का महत्व आदिकाल से चला आया है। मानव स्वास्थ्य, सौन्दर्य, पर्यावरण शुद्धता एवं आर्थिक दृष्टि से सब्जियों का अधिक महत्व है। शोध पत्र में हनुमानगढ़ जिले की सब्जी कृषि का भौगोलिक अध्ययन किया गया है। हनुमानगढ़ जिले में सब्जी उत्पादन की भौगोलिक दशाएं अनुकूल है। घग्घर बेल्ट की उपजाऊ मृदा, मीठा जल, यातायात सुविधा, उपभोक्ता बाजार इत्यादि ने कृषकों को इस ओर आकर्षित किया है। जिले में खरीफ–रबी–जायद तीनों ऋतुओं में सब्जी उत्पादन किया जाता है। जिले में आलू, मैथी, गाजर, मूली, भिण्डी, मटर, ककड़ी, खीरा, लोकी, प्याज, लहसून इत्यादि कृषि आधुनिक तकनीको से की जाती है। बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी, मंहगाई, लघु जोतों का आकार, इत्यादि के लिए सब्जी की खेती के साथ मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, डेयरी, पशुपालन, मुर्गीपालन इत्यादि लाभकारी हो रही है। शोध क्षेत्र में सब्जी की खेती को बढ़ाना देने के लिए सड़कों, मंडियों, पैकिंग, प्रसंस्करण इकाईयों, कोल्डस्टोरेज का विकास एवं कृषि यंत्रों, तकनीकों, उन्नत बीज, खाद उर्वरक इत्यादि में सरकारी सहायता से सब्जियों की खेती क्षेत्र के किसानों को आकृषित करेगा।

मूलशब्द : उन्नत किस्में, सिंचाई सुविधा, तकनीकी ज्ञान उपभोक्ता बाजार, प्रसंस्करण।

सब्जियों की कृषि : हनुमानगढ़ जिले (राजस्थान) एक प्रतीक अध्ययन

प्रस्तावना

भारत एक कृषि प्रधान देश है। खाद्यान्न के मामले में भारत आत्मनिर्भर है। सब्जी उत्पादन में हमारा देश विश्व में दूसरे स्थान पर है। सब्जियों का महत्व आदिकाल से ही मानव जीवन में समझा जाता रहा है। भारतीय आहार में 8 से 10 प्रतिशत सब्जियाँ होती है। आहार विशेषज्ञों के अनुसार प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 280 ग्राम साक–सब्जी खाने की सिफारिश करते है जबकि हमारे देश में प्रति व्यक्ति प्रतिदिन 140 ग्राम ही है जो सिफारिश की आधी है। साक–सब्जी प्रोटीन, वसा, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन इत्यादि का अच्छा स्त्रोत है। मानव स्वास्थ्य, सौन्दर्य, पर्यावरण शुद्धता एवं आर्थिक दृष्टि से साक–सब्जियों की महत्ती भूमिका है।

मानचित्र संख्या 1 : हनुमानगढ़ जिला अवस्थिति मानचित्र

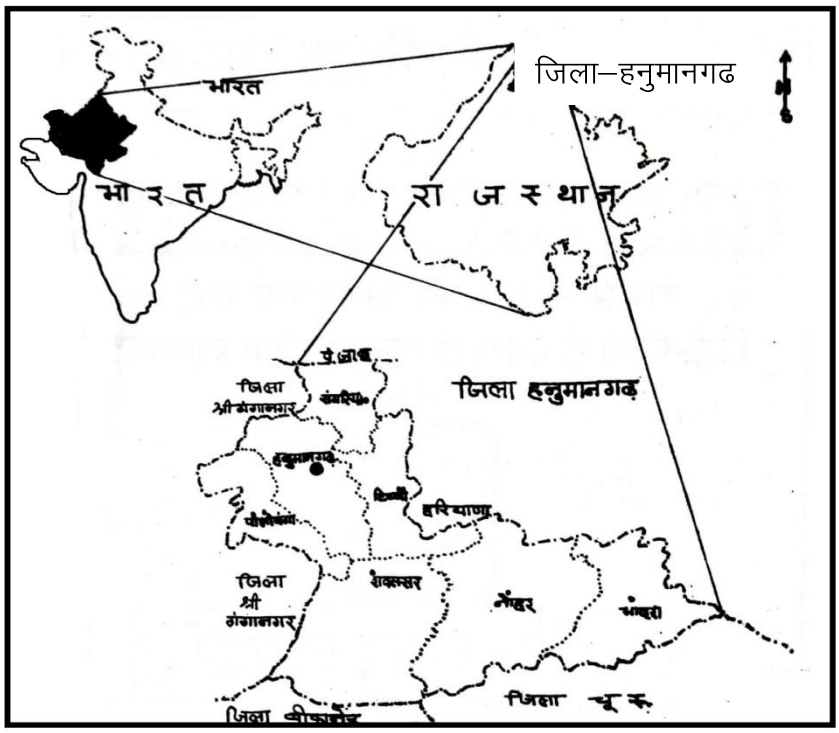

हनुमानगढ़ जिले में सब्जी उत्पादन की भौगोलिक दशाएं अनुकूल है। संगरिया, टिब्बी, हनुमानगढ़, पीलीबंगा का समतल मैदान, उपजाऊ मृदा, मीठा जल, ट्यूबवैल सुविधा, यातायात सुविधा, पर्याप्त जनसंख्या, सरकारी सुविधाएं एवं बीचों बीच म गुजरती घग्घर नदी (नाली) इन सब घटकों से यहां भिन्न–भिन्न प्रकार की साक–सब्जी की खेती यहां का कृषक लम्बे अरसे से करता आया है। हनुमानगढ़ जिले का भौगोलिक क्षेत्रफल 9656.09 वर्ग किलोमीटर है। जनसंख्या वर्ष 2011 में 1774692 थी। जनघनत्व जिले का 184 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर है। यहां की मृदा एल्युवियल प्रकार की है। यहां की सामान्य वर्षा 253.7 मिलीमीटर एवं तापमान ग्रीष्म ऋतु में 48^0 सेन्टिग्रेड (अधिकतम) व शीतकाल में 2^0 सेन्टिग्रेड (न्यूनतम) रहता है।

जिले में रबी, खरीफ एवं जायद तीनों ऋतुओं की साग–सब्जियाँ पैदा की जाती हैं। बढ़ती जनसंख्या, मंहगाई, परम्परागत खेती में अधिक लागत एवं कम बचत, पानी की कमी, प्राकृतिक प्रकोप, घटता जोतों का आकार इत्यादि ने लोगों को गैर परम्परागत खेती विशेषकर साक–सब्जी की तरफ मोड़ा है। जिले के कृषक भिण्डी, तोरी, लोकी, बैंगन, टमाटर, खीरा, मिर्च, लहसुन, प्याज, आलू, मूली, गाजर, गोभी, मटर, टिण्डा, खरबूजा, तरबूज, ककड़ी तर, पेठा, मैथी, ग्वारफली, पोदिना, धनियां सौंफ, करेला इत्यादि की उद्यानिकी कर रहे है।

सब्जी की कृषि से प्रति इकाई अधिक उत्पादन, पोषाहार सुरक्षा, रोजगार का हल, कृषि विविधीकरण, मृदा उर्वरता में वृद्धि साग–सब्जियों का जीवन में बहुउपयोग पर्यावरण शुद्धता, सौंदर्य, कच्चा माल, अधिक लाभ इत्यादि प्राप्त होने के कारण यहां का कृषक साक–सब्जी की खेती की ओर आकर्षित हुआ है।

शोध कार्य का उद्देश्य

1. साक–सब्जियों का क्षेत्रीय विकास एवं सम्भावनाओं का अध्ययन।
2. सब्जियों की खेती के विभिन्न घटकों का विश्लेषण करना।
3. जिले की खेती के लाभकारी पहलू का अध्ययन करना।
4. साक–सब्जी की खेती हेतु उपयुक्त सुझाव देना।

संमक संकलन

शोध कार्य हेतु प्राथमिक एवं द्वितीयक संमको का उपयोग किया गया है। इसमें शोध जर्नल, राजकीय प्रतिवेदन, पत्रिकाएं, समाचार पत्र, पुस्तकें, इन्टरनेट वेबसाइटों का प्रयोग संमक (आंकड़े) संकलन हेतु किया गया है।

विधितन्त्र

प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि पर आधारित है।

उपकरण प्रविधियां

साक्षात्कार एवं सांख्यिकीय विधि से शोध समंको का संग्रहण कर परिणाम परीक्षण किये गये है।

आंकड़ो का सारणीयन एवं व्याख्या : हनुमानगढ़ जिले में सब्जियों की कृषि

हनुमानगढ़ जिले में उद्यान विभाग 1997 से उद्यानिकी फल–फूल सब्जियों को बढ़ावा देता आ रहा है। जिले का आधा भाग सिंचाई से वंचित है अथवा जल की कमी है इस हेतु जल बचत अति आवश्यक है। बूंद–बूंद सिंचाई प्रणाली, फव्वारा सिंचाई प्रणाली, पक्की डिग्गी, सौलर पम्प सैट इत्यादि के उपयोग से जल बचत होती है। जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ रही है वैसे–वैसे कृषि जोतो का आकार घट रहा है। अतः विस्तृत खेती का रकबा कम और लघु कृषि का रकबा ज्यादा है। लघु कृषि में सघन कृषि द्वारा एवं वर्ष में तीन–तीन उपजें लेकर ही बचत कर सकते हैं एवं कृषि के साथ–साथ मधुमक्खी पालन, पशुपालन, मुर्गीपालन, पौधशाला, डेयरी, मत्स्यपालन इत्यादि सहायक क्रियाएं कर कृषक अधिक से अधिक मुनाफा कमा सकता है। सब्जी की कृषि ही ऐसा कर्म है जो इन परिस्थितियों में जिले में उचित बैठता है। जिले के घग्घर बेल्ट में सब्जी की खेती प्रचुर मात्रा में होती है जिले के दक्षिणी भाग नोहर–भादरा–रावतसर तहसीलों में सब्जी की खेती विरल क्षेत्र में होती है।

सिंचाई सुविधा हनुमानगढ़ जिले में वर्ष 2017–18 में कुल सिंचित क्षेत्र 810472 हेक्टेयर था। इन्दिरा गाँधी नहर से 215360 हेक्टेयर, भाखड़ा से 521761 हैक्टेयर, ट्यूबवैल से 13394 हेक्टेयर, कुओं से 315 हेक्टेयर, अन्य 73351 हेक्टेयर भाग सिंचित था। यह तालिका संख्या –1 से अधिक स्पष्ट होता हैं।

तालिका 1
हनुमानगढ़ जिला : सिंचाई के स्रोत वर्ष 2017–18
(हैक्टेयर)

सिंचाई स्त्रोत	इन्दिरा गांधी नहर	भाखड़ा नहर	टयूबवेल	कुएं	अन्य	कुल
क्षेत्र	215360	521761	13394	315	73351	824181

स्रोत : Agriculture Statistics 2017-18 D.E.S. Rajasthan Jaipur.

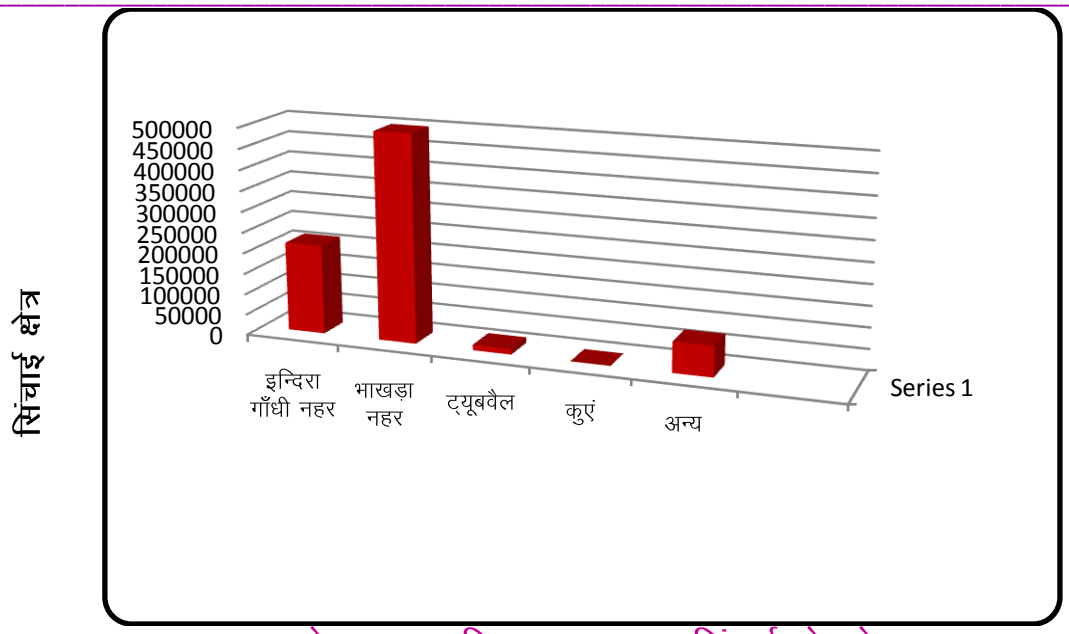

आरेख –01 : जिला हनुमानगढ़ सिंचाई के स्रोत

हनुमानगढ़ जिले में सबसे अधिक 63.31 प्रतिशत सिंचाई भाखड़ा नहर प्रणाली द्वारा एवं सबसे कम 0.02 प्रतिशत कुओं द्वारा होती है।

तालिका –2

हनुमानगढ़ जिला : सिंचित क्षेत्र 2017–18 (प्रतिशत में)

सिंचाई स्त्रोत	इन्दिरा गाँधी नहर	भाखड़ा नहर	अन्य	ट्यूबवैल	कुएं	कुल
क्षेत्र	26.13	63.31	8.90	1.46	0.02	99.82

स्रोत : Agriculture Statistics 2017-18 D.E.S. Rajasthan Jaipur.

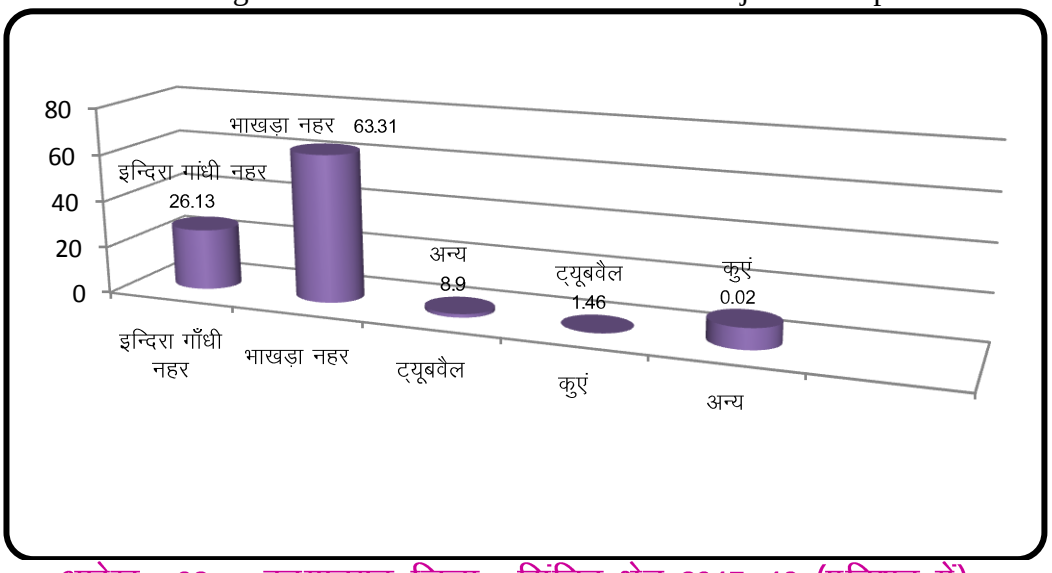

आरेख –02 : हनुमानगढ़ जिला : सिंचित क्षेत्र 2017–18 (प्रतिशत में)

हनुमानगढ़ जिले के दक्षिणी क्षेत्र में जल की पर्याप्त कमी है। अतः बूंद–बूंद सिंचाई, जल संग्रहण, सामूहिक डिग्गी इत्यादि द्वारा जल की बचत कर साग–सब्जी की कृषि उपयुक्त है एवं उन क्षेत्रों में शुष्क कृषि अनुकूल रहेगी या कम जल वाली खेती कर सकते है जैसे – प्याज, मैथी, ग्वारफली, मूली, ककड़ी, तोरी, ग्वारपाठा, बैंगन, टिंडा, लहसुन, मतीरा, काचर, सांगरी इत्यादि।

कृषि अनुदान एवं तकनीकी ज्ञान –

जिले में राष्ट्रीय कृषि विकास योजना के तहत पक्की डिग्गी निर्माण हेतु कृषकों को अनुदान दिया जा रहा है तथा पिछले कुछ वर्षो में 3000 कृषकों को लाभान्वित किया जा चुका है। कुछ कृषक ड्रिप संयन्त्रो, फव्वारा सयन्त्र पद्धति स्थापित कर परम्परागत फसलों के साथ–साथ सब्जियों का भी उत्पादन कर रहे है। ड्रिप पद्धति द्वारा, सतही सिंचाई की अपेक्षा, सब्जियों के उत्पादन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक वृद्धि देखी गयी हैं यदि इन कृषकों को उत्पादन सम्बन्धी तकनीकी प्रशिक्षण (प्लास्टिक टनल, ग्रीन हाउस, शैडनेट हाउस) देकर उत्पादन में बढ़ोतरी के साथ–साथ सब्जियों की उच्च गुणवता प्राप्त की जा सकती है।

तालिका –3

जिले में विभिन्न सब्जियों का क्षेत्र, उत्पादन वर्ष 2011–12 एवं 2019–20

क्र.सं.	नाम सब्जियाँ	वर्ष 2011–12		वर्ष 2019–20	
		क्षेत्र (हैक्टेयर मे)	उत्पादन (मीट्रिकटन में)	क्षेत्र (हैक्टेयर मे)	उत्पादन (मीट्रिक टन में)
1.	आलू	250	1270	3950	98750
2.	बैंगन	415	3644	70	1960
3.	टमाटर	450	4180	145	5220
4.	मिर्च	300	2115	0	0
5.	पतागोभी	150	2250	140	2520
6.	फूलगोभी	210	2520	140	2520
7.	लोकी	235	2130	0	0
8.	कद्दू	95	1030	0	0
9.	तोरी	145	845	0	0
10.	ककड़ी	45	500	0	0
11.	करेला	40	200	0	0
12.	टिंडा	270	1830	0	0
13.	तरबूज	130	740	0	0
14.	गाजर	225	5625	240	6480
15.	मूली	200	3200	290	8120
16.	भिण्डी	515	1963	–	–
17.	पालक	40	200	95	570
18.	लोबिया	65	1200	0	0
19.	प्याज	200	4000	220	2640
20.	शकरकन्द	–	–	32	576
21.	मटर	–	–	260	2340
22.	धनिया	–	–	13	14.3
23.	लहसुन	–	–	150	1650
24.	अन्य रबी सब्जी	–	–	80	640
25.	रबी मसाले	–	–	45	450
	कुल	**3980**	**39462**	**5930**	**135530**

स्रोत : उधान विभाग हनुमानगढ़ (वर्ष 2011–12, 2019–20)

सब्जी उत्पादन – जिले में सरकारी सहयोग एवं कृषकों की जागरूकता एवं सिंचाई की नई तकनीक की वजह से क्षेत्र में सब्जी उत्पादन में उत्तरोतर बढोतरी हुई हैं। जिले में वर्ष 2011–12 में कुल सब्जियां का क्षेत्रफल 3980 हेक्टेयर था एवं उत्पादन 39462 मीट्रिक टन हुआ। वर्ष 2019–20 में सब्जियों का क्षेत्र 5930 हेक्टेयर था एवं उत्पादन 135530.3 मीट्रिक टन हुआ। वर्ष 2011–12 की बजाय वर्ष 2019–20 में सब्जियों के क्षेत्र एवं उत्पादन दोनों में वृद्धि हुई। वृद्धि का कारण सब्जियों का उचित दाम, नियमित रोजगार, छोटी जोते, परम्परागत खेती से कृषकों का धीरे–धीरे मोह भंग होना एवं आधुनिक तकनीकी उपयोग रहा है।

जिले में सब्जियों के उत्पादन के बाद जिन्सों को मण्डियों, विपणन केन्द्रो एवं स्थानीय लोगों को बेच दी जाती है। अतः जिन्स की कीमत भी सब्जियों की बुवाई का आधार है जिस वर्ष किसी जिन्स की कीमत ऊँची

रहेगी। अगले वर्ष उस सब्जी की बुवाई का रकबे में वृद्धि देखी गयी है। नीचे तालिका संख्या–4 द्वारा विभिन्न जिन्सों के भाव वर्ष 2010–11 में 6303 रूपये प्रति क्विन्टल थे वहीं वर्ष 2015–16 में बढ़कर 9078 रूपये हो गये अर्थात् मूल्य में वृद्धि हुई। लहसुन का भाव वर्ष 2010–11 में 6420 रूपये प्रति क्विन्टल था वहीं वर्ष 2015–16 में इसके भाव 5148 रूपये प्रति क्विन्टल रह गये अर्थात् मूल्य में ह्रास हुआ। मूल्य में वृद्धि का कारण मांग अधिक एवं उत्पादन कम रहा। जबकि कम मूल्य का कारण मांग कम एवं उत्पादन ज्यादा रहा है।

तालिका– 4 : सब्जियों के मूल्य वर्ष 2010–11 से 2015–16 (क्विंटल में)

फसल	2010–11	2011–12	2012–13	2013–14	2014–15	2015–16
मिर्च	6303	7242	5221	6753	7446	9078
लहसुन	6420	2392	1117	2665	3093	5148
मैथी	2344	2338	2475	3127	4238	4217
धनियां	3179	3734	4563	6834	7376	6705

स्रोत : Agri. Statistics 2017-18 D.E.S. Rajasthan Jaipur.

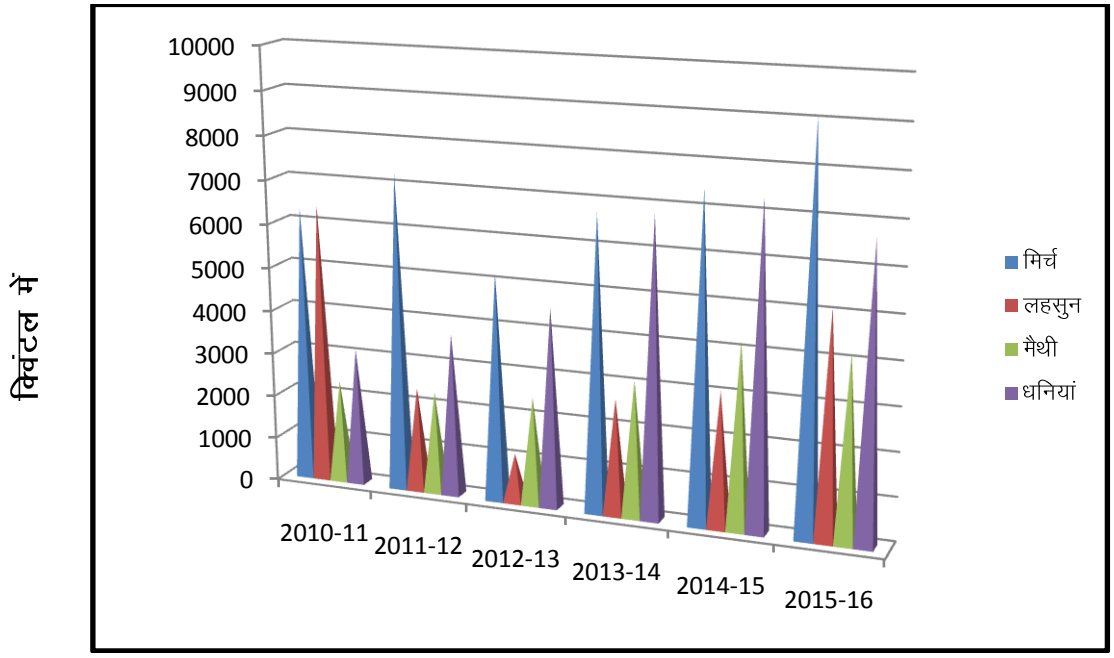

आरेख –03 : सब्जियों के मूल्य वर्ष 2010–11 से 2015–16 (क्विंटल में)

हनुमानगढ़ जिले में सबसे अधिक सब्जियां हनुमानगढ़, पीलीबंगा, टिब्बी, संगरिया तहसीलों में होती है। जिसका कारण समतल व उपजाऊ भूमि, पर्याप्त जल एवं उपभोक्ता बाजारों की सुविधा इत्यादि रही है। भादरा–नोहर–रावतसर में सब्जियों की कृषि कम होती है। जिसका कारण शुष्क व अनुपजाऊ मृदा, जलाभाव इत्यादि रही है।

तालिका – 5
जिला हनुमागनढ़ में तहसीलवार सब्जियों का क्षेत्रफल (हैक्टेयर), उत्पादन (मैट्रिकटन) वर्ष 2014–15 से 2018–19

		आलू	बैंगन	टमाटर	हरीमिर्च	पत्तागोभी	लौकी	कद्दू	फूल गोभी	तोरी	खीरा	करेला	टिंडर	ककड़ी	गाजर	मूली	भिण्डी	शकरकन्द	मटर	पालक	लहसुन	प्याज
हनुमानगढ़	क्षेत्र	1098	78	65	40	38	33	33	50	0	6	15	48	40	56	50	55	0	38	8	0	13
	2014–15 उत्पादन	31140	796	731	300	557	470	672	613	0	66	176	388	236	1352	875	271	0	342	44	0	2486
	क्षेत्र	675	43	38	23	31	33	0	38	20	9	15	45	43	68	48	48	8	53	10	45	48
	2018–19 उत्पादन	18225	1187	1368	189	546	470	0	494	352	113	180	364	765	1819	1353	1060	156	473	65	503	58
संगरिया	क्षेत्र	747	56	47	29	27	23	23	36	0	5	11	34	29	41	36	40	0	27	5	0	81
	2014–15 उत्पादन	22410	572	527	220	396	328	468	441	0	54	130	274	173	990	630	198	0	243	29	0	1782
	क्षेत्र	486	31	27	16	23	23	0	27	14	6	11	32	31	49	34	34	5	38	7	32	34
	2018–19 उत्पादन	13122	857	972	130	405	328	0	351	245	76	132	259	551	1312	958	752	97	340	43	356	410
पीलीबंगा	क्षेत्र	913	68	57	35	33	29	29	44	0	6	13	42	35	50	44	48	0	33	7	0	99
	2014–15 उत्पादन	27390	695	639	266	484	414	590	539	0	65	154	338	209	1207	770	238	0	297	41	0	2178
	क्षेत्र	594	37	33	20	26	29	0	33	0	33	18	8	13	40	37	59	42	42	7	40	42
	2018–19 उत्पादन	16038	1023	1188	163	493	414	0	429	0	429	315	101	156	324	658	1580	1183	929	136	445	506
टिब्बी	क्षेत्र	498	37	31	13	18	16	16	24	0	3	7	23	19	27	24	26	0	18	4	0	54
	2014–15 उत्पादन	14940	378	348	144	264	228	326	294	0	33	83	185	113	652	420	129	0	162	23	0	1182
	क्षेत्र	324	20	18	11	15	16	0	18	10	4	7	22	20	32	23	23	4	25	5	22	23
	2018–19 उत्पादन	8748	553	648	90	264	228	0	234	175	51	84	176	356	857	648	509	78	224	31	245	277
रावतसर	क्षेत्र	374	28	13	14	14	12	12	18	0	2	5	17	14	20	18	20	0	14	3	0	41
	2014–15 उत्पादन	11220	286	258	106	205	171	245	221	0	22	59	137	83	483	315	99	0	126	17	0	902
	क्षेत्र	243	15	14	8	11	12	0	14	7	3	5	16	15	24	17	17	3	19	4	16	17
	2018–19 उत्पादन	6561	415	504	65	194	171	0	187	123	38	60	129	267	643	479	376	59	170	25	178	205
नोहर	क्षेत्र	332	25	21	13	12	10	10	16	0	2	5	15	13	18	16	18	0	12	2	0	36
	2014–15 उत्पादन	9960	255	236	98	176	143	204	196	0	22	59	121	77	435	280	89	0	108	11	0	792
	क्षेत्र	216	14	12	7	10	10	0	12	6	3	5	14	14	22	15	15	2	17	3	14	15
	2018–19 उत्पादन	5832	387	432	57	176	143	0	156	105	38	60	113	249	589	423	332	39	152	19	156	181
नादरा	क्षेत्र	249	19	16	10	9	8	8	12	0	2	4	11	10	14	12	13	0	9	2	0	27
	2014–15 उत्पादन	7470	194	180	75	132	114	163	147	0	22	47	82	59	338	210	64	0	81	11	0	594
	क्षेत्र	162	10	9	5	8	8	0	9	5	2	4	11	10	16	11	11	2	13	2	11	11
	2018–19 उत्पादन	4374	276	324	41	141	114	0	117	88	25	48	89	178	428	310	243	39	116	13	123	133

स्रोत : उद्यान विभाग हनुमानगढ़

उपर्युक्त तालिका से ज्ञात होता है कि हनुमानगढ़ तहसील में वर्ष 2014–15 में आलू का क्षेत्र सबसे अधिक 1098 हैक्टेयर एवं उत्पादन अन्य तहसीलों से ज्यादा 31140 मैट्रिक टन रहा। आलू की बुवाई वर्ष 2014–15 में अधिक हुई क्योंकि आलू का भाव उस वर्ष अधिक रहा, वर्ष 2018–19 में आलू की बुवाई कम हुई जिसका कारण आल् की कीमत गिर गयी। अतः फसलों का क्षेत्र कीमत द्वारा तय होता है। इसी प्रकार मटर का रकबा वर्ष 2014–15 की तुलना में वर्ष 2019–20 में सभी तहसीलों में वृद्धि दर्ज हुई है। क्योंकि मटर का मूल्य वर्ष 2014–15 की बजाय वर्ष 2018–19 में ज्यादा रही एवं बाजार की निकटता मुख्य कारण रहा अध्ययन में पाया गया कि कुछ क्षेत्रों में उसी वर्ष प्रति हैक्टैयर कम उत्पादन हुआ जिसका कारण अनुपजाऊ भूमि एवं पर्याप्त देखभाल, खाद, उर्वरक, सिंचाई एवं नवीन तकनीकी का अभाव रहा है। अध्ययन में पाया गया कि वर्ष 2014–15 की बजाय वर्ष 2018–19 में हर प्रकार की फसलें उत्पादित की जिसके लिए शैडनेट, मिल्चंग, ग्रीनहाउस, पॉलीहाउस, बूंद–बूंद सिंचाई, फव्वारा सिंचाई, डिग्गी, सौर सेट इत्यादि का उपयोग कर यहां के कृषकों ने अपने श्रम का नमूना पेश किया हैं।

जिले में सब्जी एवं मसालों की खेती के प्रति लोगों का रूझान दिनां दिन बढ़ रहा है। इसका कारण वर्ष में 2 या 3 फसलें ले सकते हैं– रबी, खरीफ एवं जायद। हनुमानगढ़ जिले में प्रधानतः आलू, भिण्डी, मटर, गोभी, मिर्च, गाजर इत्यादि सब्जियां एवं मैथी, लहसुन, धनियां, सौंफ इत्यादि मसालों की कृषि होती है। वर्ष 2013–14 की तुलना म वर्ष 2015–16 में सब्जी एवं मसालों के उत्पादन में वृद्धि अंकित हुई। जैसे भिण्डी का वर्ष 2013–14 में उत्पादन 625 मी.टन एवं उपज 8803 किग्रा प्रति हेक्टेयर हुआ वहीं पर्ष 2015–16 में क्रमशः 844 मैट्रिक टन व 1816 किग्रा प्रति हेक्टेयर हुआ। अध्ययन क्षेत्र में उत्पादन में वृद्धि का कारण नवीन तकनीक, उचित देखभालबाजार की निकटता, नकदी फसलें एवं उद्यानिकी विभागानुसार सब्जी, मसाला उत्पादन करना रहा है।

तालिका –5 : हनुमानगढ़ जिले में सब्जी मसाला का उत्पादन व उपज

फसल	वर्ष 2013–14			वर्ष 2015–16		
	क्षेत्र (हैक्टेयर)	उत्पादन (मैट्रिक टन)	उपज (किग्रा)	क्षेत्र (हैक्टेयर)	उत्पादन (मैट्रिक टन)	उपज (किग्रा)
भिण्डी	71	625	8803	98	844	8612
गाजर	43	1007	23419	99	2242	22646
हरी मिर्च	73	586	8000	27	212	7852
फूल गोभी	99	1458	14727	227	3632	16000
धनियां	0	0	–	4	4	1000
लहसुन	13	65	5000	19	86	4526

स्रोत : Agri. Statistics 2017-18 D.E.S. Rajasthan Jaipur.

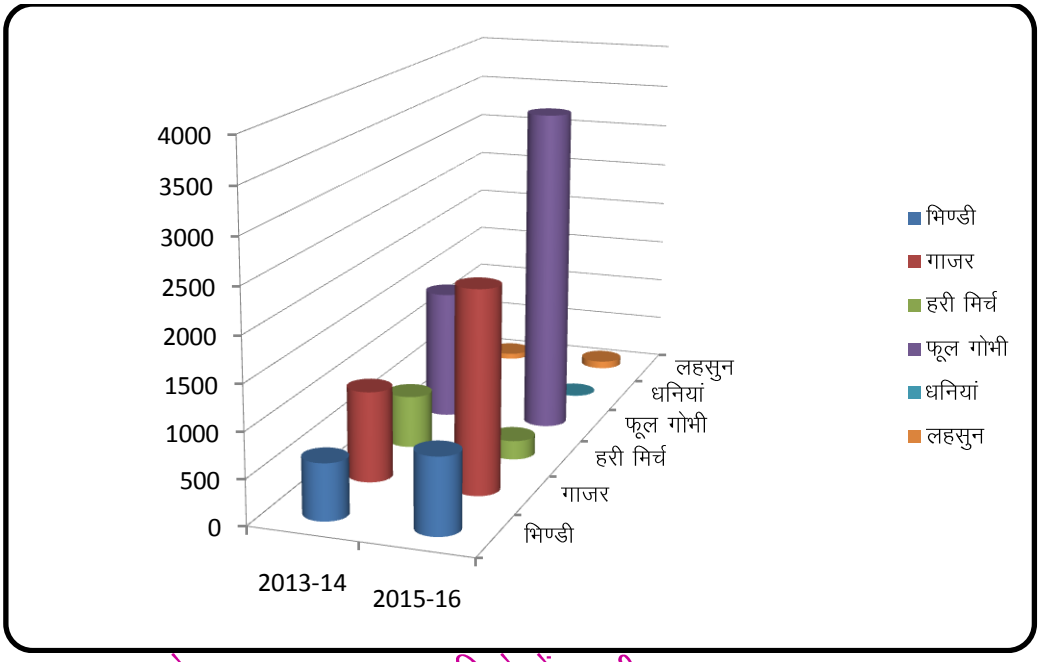

आरेख –04: हनुमानगढ़ जिले में सब्जी मसाला का उत्पादन

शोध क्षेत्र में कृषकों को साग–सब्जी की गैर परम्परागत खेती की ओर प्रोत्साहन देने के लिए उद्यान विभाग, सौर ऊर्जा संयत्र, बूंद–बूंद व फव्वारा संयत्र, प्लास्टिक टनल, ग्रीन हाउस, शेटनेट, डिग्गी निर्माण, कृषि औजार, बीज, उर्वरक इत्यादि हेतु अनुदान एवं आर्थिक सहायता करता है।

सुझाव

1. उद्यान विभाग मार्गानुसार सब्जी उत्पादन करें।
2. फसल चक्र अपनाएं।
3. नवीन तकनीकी का प्रयोग करें।
4. मृदा जांच एव मृदोपचार करे।
5. अधिक लाभ के लिए उद्यानिकी सहक्रियाऐ, मत्स्यपालन, मुर्गीपालन, पौधशाला, डेयरी, पशुपालन, मधुमक्खी पालन इत्यादि अपनाएं।

निष्कर्ष

हनुमानगढ़ जिले में सब्जी उत्पादन की अपार सम्भावनाएं है। जिले की उत्तरी चार तहसीलों संगरिया, हनुमानगढ़, टिब्बी एवं पीलीबंगा में उपजाऊ मृदा एवं मीठा जल इत्यादि की सुविधा एवं दक्षिणी की तीन

तहसीलों रावतसर, नोहर एवं भादरा में अधिकाशं रेतीली भूमि एवं जलाभाव में ड्रिप फव्वारा एवं नवीन तकनीकी का प्रयोग एवं शुष्क सघन सब्जी का उत्पादन किया जा सकता है। सब्जियां ही ऐसा स्रोत है जिनसे वर्ष में तीन–तीन फसलें ले सकते है। बढ़ती जनसंख्या, घटता जोतो का आकार, मंहगाई, बेरोजगारी इत्यादि सब्जी उत्पादन ही कृषक के लिए विकल्प हो सकता है। क्योंकि प्रति इकाई अधिक उत्पादन, पोषाहार सुरक्षा, कृषि विशेषीकरण, भूमि की उर्वरता में वृद्धि, अधिक आय, सरकारी अनुदान इत्यादि ने कृषकों को आकृष्ट किया है। सब्जी उत्पादन के साथ–साथ मत्स्य पालन, मुर्गीपालन, पशुपालन, मधुमक्खी पालन, डेयरी, नर्सरी, बीज निर्माण इत्यादि सहक्रियाऐं कर अधिक लाभ ले सकते हैं।

शोध क्षेत्र में सब्जियों की खेती को बढ़ावा देने के लिए सड़कों का विकास, मंडियों का विकास, पैंकिग व प्रसंस्करण इकाईयों को प्रोत्साहन, कोल्डस्टोरेज एवं अन्य सरकारी सहायता का लाभ देकर सब्जी की खेती को बढ़ावा दिया जा सकता है एवं उत्पादित सब्जियों को आवश्यकतानुसार तथा उचित समय पर मांग एवं पूर्ति के सिद्धान्त के अनुसार विक्रय कर कृषक अधिक से अधिक लाभ कमा सकता है।

संन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. खींची,एस.एस. (2018): उधानिकी कृषि विकास, लुलु पब्लिकेशन्स, यू.एस.ए.।
2. शुक्ल परशुराम : भारत के औषधीय वृक्ष, पोइन्टर पब्लिशर्स, जयपुर।
3. कुमार प्रमिला : कृषि भूगोल हिन्दी ग्रंथ अकादमी, मध्यप्रदेश।
4. सहायक निदेशक : उधान विभाग हनुमानगढ़ ।
5. निदेशक जिला सांख्यिकी विभाग हनुमानगढ़।
6. धवन बी.डी. (1989): एग्रीकल्चर प्रोडक्टीविटी इन इंडिया–ए स्पाशियल एनालिसिस वोल्युम–70
7. होटीकल्चर डिपार्टमेंट जयपुर।
8. Agriculture. rajasthan.gov.in
9. ऐरी बाबू श्याम गोपालः सब्जियां उगाएं आय बढ़ाएं, राष्ट्रीय साहित्य सदन, दिल्ली
10. Agri. Statistics 2017-18 D.E.S. Rajasthan Jaipur.
11. खींची, एस.एस.(2018), कृषि विकास एवं मापन स्तर, लुलु पब्लिकेशन, यू.एस.ए.
12. De. L.C.